विचार बिन्दु

वह जो अपने प्रियजनों से अत्यधिक जुड़ा हुआ है। उसे चिंता और भय का सामना करना पड़ता है। क्योंकि सभी दुःखों कि जड़ लगाव है। इसलिए खुश रहने कि लिए लगाव छोड़ दीजिये। –चाणक्य सुविचार

व्याधिक्षमत्व क्या है?

लगभग 5000 वर्ष पूर्व की बात है। भगवान आत्रेय के शिष्य अग्निवेश ने अपने गुरु से एक प्रश्न किया: भगवन! देखने में आता है कि हितकारी आहार का उपयोग करते हुये भी कुछ लोग रोगी हो जाते हैं, जबकि अहितकारी आहार लेते हुये भी कुछ लोग निरोगी देखे जाते हैं। ऐसी स्थिति में क्या अच्छा है और क्या बुरा इसकी पहचान कैसे की जाये? इस प्रश्न का जो उत्तर आत्रेय ने दिया, वह आज भी यथावत विज्ञान-संगत है। आत्रेय का उत्तर था:–अग्निवेश! हितकारी आहार करने वाले लोगों में आहार के कारण होने वाले रोग उत्पन्न नहीं होते और हितकारी आहार लेने मात्र से समस्त रोगों का भय दूर नहीं हो जाता। हानिकारक भोजन के अलावा भी रोगों के तमाम कारण, जैसे ऋतुओं का विपरीत होना, प्रज्ञापराध या जानबूझकर गलती करना, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध का अतियोग, मिथ्या योग एवं विषम योग आदि ऐसे कारण हैं जो उचित भोजन लेने के बावजूद भी मनुष्य को बीमार कर देते हैं। इसीलिये हितकारी आहार लेने वाले रोगी हो जाते देखे जाते हैं। हानिकारक आहार का उपयोग करने वालों में पथ्य, आहार, व शरीर की स्थिति में भिन्नता होने से हानिकारक आहार तुरन्त हानि नहीं पहुंचा पाते। सभी अपथ्य बराबर दोष वाले नहीं होते, न ही सभी दोष बराबर बलवान होते, और न सभी शरीर व्याधिक्षमत्व या रोग प्रतिरोधक क्षमता से संपन्न होते (न च सर्वाणि शरीराणि व्याधिक्षमत्वे समर्थानि भवन्ति। च.सू.28.7)। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि एक ही अपथ्य आहार जगह, समय, संयोग, वीर्य, व मात्रा की भिन्नता के कारण या ज्यादा खा लेने से और अधिक अपथ्य हो जाता है। वही दोष विविध कारणों से, विरुद्ध चिकित्सा वाला, धातुओं में पहुंचा हुआ, शरीर के प्राणायतनों में उत्पन्न, मर्म पर चोट करने वाला, अत्यंत कष्टदायी अतिशय जल्दी रोगों को उत्पन्न करने वाला होता है। अंत में आत्रेय यह भी बताते हैं कि मूल रूप से शरीर की बनावट भी नैसर्गिक व्याधिक्षमत्व पर प्रभाव डालती है। बहुत मोटे या बहुत दुबले लोग, रक्त, मांस, व अस्थियों के सुसंगठित न होने के कारण बेडौल शरीर वाले लोग, दुर्बल, अल्पसत्त्व या कमजोर मनोबल वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता नहीं होती। जबकि इनके उलट लक्षणों वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता होती है। इन अपथ्य आहारों, दोषों व शरीर की भिन्नता के कारण बीमारियाँ भी कम या ज्यादा, जल्दी या देर से उत्पन्न होती हैं।

अब आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि क्यों कुछ लोग प्राय: कभी बीमार नहीं पड़ते। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनमें जीवन के अंतिम दिन तक लगभग सभी क्लिनिकल पैरामीटर्स सामान्य बने रहते हैं। जैसा कि आपने पूर्व में पढ़ा, वस्तुत: इस चमत्कार के पीछे कोई चमत्कार नहीं बल्कि व्याधिक्षमत्व है। प्राचीन भारत के महर्षि-वैज्ञानिक आचार्य चरक व्याधिक्षमत्व सिद्धांत-प्रिन्सिपल ऑफ़ इम्यूनिटी-के जनक माने जाते हैं।

जिस व्यक्ति का सहज (इनेट) या युक्तिकृत (डेराइव्ड) व्याधिक्षमत्व मज़बूत है वह मुश्किल से ही बीमार पड़ता है। यदि बीमार पड़ भी जाये तो बीमारी अपना बल मुश्किल से ही दिखा पाती है। व्याधिक्षमत्व में दो शब्द निहित हैं, व्याधि एवं क्षमत्व। व्याधि का तात्पर्य शरीर की धातुओं (रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र) में विषमता उत्पन्न होना है। क्षमत्व से तात्पर्य इस विषमता को न होने देने की क्षमता है। मानसिक बीमारियों के सन्दर्भ में सत्त्व गुण जितना अधिक होगा, व्याधिक्षमत्व उतना ही बेहतर होगा। शरीर में सहज व्याधिक्षमत्व के सन्दर्भ में यह बात महत्वपूर्ण है कि शरीर में दुरुस्त मांसपेशियों, संरचना, स्वरुप व मज़बूतइन्द्रियों वाला व्यक्ति रोगों के बल से कभी प्रभावित नहीं होता। भूख, प्यास, ठंडी, गर्मी, व्यायाम को ठीक से सहन करने वाला, सम अग्नि वाला, बुढ़ापे की उम्र में ही बूढ़ा होने वाला, मांसपेशियों के सही चय वाला व्यक्ति ही स्वस्थ है (च.सू.21.18): सममांसप्रमाणस्तुसमसंहननोनर:। दृढेन्द्रियोविकाराणां न बलेनाभिभूयते।।क्षुत्पिपासातपसह: शीतव्यायामसंसह:। समपक्तासमजर: सममांसचयोमत:।।

आधुनिक वैज्ञानिक संदर्भ में व्याधिक्षमत्व को इम्यूनिटी कहा जाता है। यह प्रतिरक्षा तंत्र संक्रमण, बीमारी या अन्य अवांछित तत्वों के आक्रमण से बचने के लिये शरीर को सुरक्षा प्रदान करता है। किसी व्यक्ति में व्याधिक्षमत्व में कमी होने से शरीर इम्यूनो-कॉम्प्रोमाइज्ड स्थिति में आ जाता है। ऐसी स्थिति में शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता कम होने से रोगजनन आसानी से होता है। इम्यूनिटी किसी व्यक्ति के शरीर में विशिष्ट एन्टीबॉडी या श्वेत रक्त कौशिकाओं की क्रिया से किसी विशेष संक्रमण, विषाक्त पदार्थ या हानिकारी जीवन-शैली से होने वाले रोगों का प्रतिरोध करने की क्षमता के रूप में समझा जाता है।

जिस व्यक्ति का सहज (इनेट) या युक्तिकृत (डेराइव्ड) व्याधिक्षमत्व मज़बूत है वह मुश्किल से ही बीमार पड़ता है। यदि बीमार पड़ भी जाये तो बीमारी अपना बल मुश्किल से ही दिखा पाती है। व्याधिक्षमत्व में दो शब्द निहित हैं, व्याधि एवं क्षमत्व। व्याधि का तात्पर्य शरीर की धातुओं (रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र) में विषमता उत्पन्न होना है। क्षमत्व से तात्पर्य इस विषमता को न होने देने की क्षमता है।

व्याधिक्षमत्व को परिभाषित करते हुये चरकसंहिता के दिग्गज टीकाकार आचार्य चक्रपाणि ने लगभग 900 साल पहले लिखा (च.सू. 28.7 पर चक्रपाणि): व्याधिक्षमत्वं व्याधिबालविरोधित्वं व्याध्युत्पादप्रतिबन्धकत्वमिति यावत्। तात्पर्य यह है कि व्याधिबल की विरोधिता व व्याधि की उत्पत्ति में प्रतिबंधक होना व्याधिक्षमत्व है। अभिप्राय यह है कि शरीर में उत्पन्न बीमारी केबल या तीक्ष्णता को रोकने और बीमारी की उत्पत्ति को रोकने वाली क्षमता को व्याधिक्षमत्व कहा जाता है।

व्याधिक्षमत्व को बल, ओज और प्राकृत श्लेष्मा के रूप में भी जाना जाता है। बल वह शक्ति है जिसके द्वारा शरीर विभिन्न चेष्टाओं से कार्य संपन्न करता है। इस कार्योत्पादक शक्ति को व्यायाम-शक्ति से जाना देखा जाता है। बल के तीन प्रकार हैं (च.सू.11.36): त्रिविधंबलमिति- सहजं, कालजं, युक्तिकृतं च। सहजंयच्छरीरसत्त्वयो: प्राकृतं, कालकृतमृतुविभागजंवय: कृतं च, युक्तिकृतंपुनस्तद्यदाहारचेष्टायोगजम्। बल तीन प्रकार के होते हैं। सहज बल शरीर और मन पर आधारित होता है। उम्र के साथ शरीर की वृद्धि से प्राप्त बल को कालज बल कहा जाता है। खान-पान, जीवन-शैली और व्यायाम आदि की युक्ति से प्राप्त बल को युक्तिकृत बल कहा जाता है। रोग से रक्षा करने वाले को बल कहा जाता है। व्याधिक्षमत्वको ओज और ओज को बल के रूप में भी समझा जाता है (सु.सू.15.19) रसादीनांशुक्रान्तानां धातूनांयत्परंतेजस्तत्खल्वोजस्त देवबलमित्युच्यते स्वशास्त्रसिद्धान्तात्। रसादिक तथा शुक्रान्त धातुओं के उत्कृष्ट सार भाग को ओज कहते हैं तथा आयुर्वेद के अनुसार उसी का दूसरा नाम बल है। यही बल व्याधियों से शरीर की रक्षा करता है। यहाँ एक बात समझना आवश्यक है ओज और बल हालाँकि एक कहे गये हैं किन्तु ओज को कारण और बल को कार्य माना जाता है। ओज का रूप, रस और वर्ण होने से द्रव्य है जबकि बल इसका कार्य है। यहाँ व्याधिक्षमत्व के सन्दर्भ में बल (कार्य) और कारण (ओज) को एक मान लिया जाता है। इसी सन्दर्भ में प्राकृत कफ को बल या व्याधिक्षमत्व का कारण माना जाता है (च.सू.17.117): प्राकृतस्तुबलं श्लेष्मा विकृतो मल उच्यते। स चैवौज:स्मृत:काये स च पाप्मोपदिश्यते।। यही कारण है कि कफज प्रकृति में उत्तम बल, पित्तज प्रकृति के व्यक्तियों में मध्यम बल तथा वातज प्रकृति के व्यक्तियों में अवर बल होता है।

इस प्रकार व्याधिक्षमत्व का तात्पर्य व्याधि-बल का विरोध शरीरगत बल द्वारा किया जाता है। व्याधिक्षमत्व को प्रभावित करने वाले विभिन्न भावों को दशविधि रोगी परीक्षा के भावों में भी देखा जाता है। उदहारण के लिये व्यक्ति की मूल प्रकृति का बल से सीधा सम्बन्ध होता है। सबसे उत्तम सम प्रकृति (वात-पित्त-कफज) है, परन्तु किसी जनसंख्या में समप्रकृति वाले बहुत कम होते हैं। अत: व्यवहार में कफ प्रकृति वालों को बेहतर बल वाला माना जाता है। इसके साथ ही सार भी बल को प्रभावित करता है। सारयुक्त से तात्पर्य यह है कि व्यक्ति में साररूप धातुओं का नियमित निर्माण होता है। सार धातुओं के सम्यक प्रकार से उत्पन्न होते रहने पर शरीर में व्याधिक्षमत्व बढ़िया बना रहता है। जैसा कि पूर्व में चर्चा की गयी है, बल का मुख्य कारक ओज है जो सभी धातुओं का सार है। साररूप में यह सभी धातुओं में व्याप्त होकर धातुओं की रक्षा करता है। व्याधिक्षमत्व को प्रभावित करने वाले अन्य भावों में सात्म्य, सत्त्व, अग्नि, शारीरिक-शक्ति व वय हैं। अग्निबल को आहार करने की क्षमता से परखा जा सकता है। आहार-शक्ति (आहार की मात्रा) अग्निबल पर आश्रित है। यदि व्यक्ति की आहार शक्ति मज़बूत है तो भोजन का पाचन और धातुओं की पुष्टि यथोचित होने से शरीर मज़बूत रहता है। व्यायाम-शक्ति या शारीरिक रूप से श्रम करने की शक्ति भी बल का संकेतक है। व्यक्ति की वय या उम्र का भी बल से संबंध होता है। युवावस्था में उत्तम बल और जरा या बुढ़ापा आने पर बल कम रहता है।

व्याधिक्षमत्वकारोगों से बचाव और उपचार में अनिवार्यता को देखते हुये यह प्रश्न स्वाभाविक है कि व्याधिक्षमत्व को बढ़ाने के लिये कौन सी युक्ति का क्रियान्वयन किया जाये? व्याधिक्षमत्व बढ़ाने के लिये बल व ओज की वृद्धि में सहायक द्रव्यों और क्रियाओं का इस प्रकार युक्तिपूर्वक नियमित सेवन करना चाहिये, जिससे व्याधिक्षमत्व का संरक्षण व वृद्धि हो किन्तु प्रकृति, अग्नि, धातुओं व मलक्रिया का समत्व तथा आत्मा, इन्द्रियों व मन की प्रसन्नता यथावत बनी रहे। यह विषय इतना विस्तृत है कि पूरा आयुर्वेद इसमें समाहित है। तथापि संक्षेप में व्याधिक्षमत्व बढ़ाने के लिये सात रक्षा-दीवारों की निरंतर और सम्यक सार-सम्हाल करना आवश्यक है। इनमें (1) आहार या खानपान, (2) विहार या जीवनशैली, (3) स्वस्थवृत्त या व्यक्तिगत स्वास्थ्य विषयक क्रियायें, (4) सद्वृत्त या व्यक्तिगत सदाचरण, (5) पंचकर्म या शारीरिक विषाक्तता को बाहर करने के लिये आयुर्वेद की पांच प्रक्रियायें, (6) रसायन या उम्र-आधारित रोगजनन को रोकने हेतु कायाकल्प उपाय, और अंतत: (7) औषधि या चिकित्सा शामिल हैं।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

शराब पीने वाले का दोष या उसके जीन्स?

अशोक कुमार

यह सच है कि कुछ लोगों में आनुवंशिक भिन्नताओं के कारण शराब के प्रति सहनशीलता अधिक होती है। इसका मतलब है कि उन्हें शराब के प्रभाव महसूस करने के लिए अधिक मात्रा में शराब की आवश्यकता होती है। यह स्थिति उन्हें अधिक शराब पीने के लिए प्रेरित कर सकती है, जिससे शराब की लत का खतरा बढ़ जाता है।

शराब के चयापचय में शामिल जीन:–

ADH (Alcohol dehydrogenase): यह एंजाइम शराब को एसिटाल्डिहाइड में परिवर्तित करता है, जो एक विषैला पदार्थ है। कुछ लोगों में ADH जीन के प्रकार के कारण यह प्रक्रिया तेजी से होती है, जिससे एसिटाल्डिहाइड का निर्माण अधिक होता है।

ALDH (Aldehyde dehydrogenase): यह एंजाइम एसिटाल्डिहाइड को एसिटिक एसिड में परिवर्तित करता है, जो कम हानिकारक होता है। कुछ लोगों में ALDH जीन के प्रकार के कारण यह प्रक्रिया धीमी होती है, जिससे शरीर में एसिटाल्डिहाइड जमा होता है। एसिटाल्डिहाइड के कारण मतली, उल्टी और अन्य अप्रिय प्रभाव होते हैं, जो शराब पीने की मात्रा को सीमित कर सकते हैं।

आनुवंशिक कारकों का प्रभाव:–

कुछ लोगों में, इन जीनों में भिन्नता के कारण, शराब का चयापचय धीमा हो सकता है, जिससे वे अधिक शराब पीते हैं और उन्हें कम नशा होता है। यह स्थिति शराब की लत के विकास के जोखिम को बढ़ा सकती है। इसका मतलब है कि उनके शरीर को शराब को संसाधित करने में अधिक समय लगता है, जिससे वे अधिक शराब पी सकते हैं ताकि वे वही प्रभाव महसूस कर सकें जो अन्य लोग कम मात्रा में शराब से महसूस करते हैं। हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि आनुवंशिकी शराब की लत का एकमात्र कारण नहीं है।

अन्य महत्वपूर्ण कारक:–

पर्यावरण: बचपन के अनुभव, सामाजिक दबाव और तनाव जैसे पर्यावरणीय कारक भी शराब की लत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

व्यक्तिगत विकल्प: व्यक्ति के अपने निर्णय और व्यवहार भी शराब की लत में योगदान करते हैं।

निष्कर्ष:– यह कहना सही नहीं है कि किसी व्यक्ति का शराब के प्रति अधिक सेवन पूरी तरह से उसके जीन्स के कारण होता है। आनुवंशिकी एक भूमिका निभाती है, लेकिन पर्यावरणीय और व्यक्तिगत कारक भी महत्वपूर्ण हैं। शराब की लत एक जटिल स्थिति है जिसके लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

970 इंग्लिश स्कूलों में संकाय मंजूरी के बाद 11वीं कक्षा में प्रवेश होंगे

कक्षा 11 में संकाय स्वीकृति के लिए माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने राज्य सरकार को प्रस्ताव भिजवाए

बीकानेर, (निसं)। शिक्षा निदेशालय ने स्कूलों में संकाय स्वीकृति के प्रस्ताव राज्य सरकार को भेजे राज्य के महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया 7 मई से शुरू कर दी गई है, लेकिन प्रदेश के लगभग 970 इंग्लिश स्कूलों में 11वीं कक्षा के प्रवेश की प्रक्रिया संकाय स्वीकृति के बाद शुरू की जाएगी।

जानकारी के अनुसार राज्य सरकार की ओर से शिक्षा सत्र 2021-22 में शुरू किए गए इन स्कूलों में नई शिक्षा सत्र 2025-26 से 11वीं कक्षा शुरू होगी। कक्षा 11 में संकाय स्वीकृति के लिए माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने राज्य सरकार को प्रस्ताव भिजवाए हैं। प्रस्ताव पर स्वीकृति मिलने के बाद 11वीं कक्षा में प्रवेश का विद्यार्थियों को मौका मिलेगा। संभावना जताई जा रही है कि अधिकांश स्कूलों में विज्ञान संकाय की स्वीकृति मिल सकती है।

महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों की समीक्षा के लिए गठित

- **प्रस्ताव पर स्वीकृति मिलने के बाद 11वीं कक्षा में प्रवेश का विद्यार्थियों को मौका मिलेगा, संभावना जताई जा रही है कि अधिकांश स्कूलों में विज्ञान संकाय की स्वीकृति मिल सकती है**

कमेटी ने आंकलन किया कि शहर व गांवों में आंकलन के बाद संकाय खोले जाएं। वहीं बच्चों में विज्ञान विषय पढ़ने के प्रति क्रेज और विज्ञान संकाय की न्यूनता को देखते हुए विज्ञान संकाय खोलने की अनुशंसा की है। इसके तहत महात्मा गांधी इंग्लिश स्कूलों में साइंस फैकल्टी खोले जाने की संभावना अधिक है। महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया चल रही है अभ्यर्थी 15 जून तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। निर्धारित सीटों से अधिक आवेदन आने पर 17 जून को ऑनलाइन लॉटरी के जरिए अभ्यर्थियों का चयन किया जाएगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर ने 12वीं कक्षा के नतीजे गुरुवार को घोषित कर दिए हैं। दसवीं कक्षा का परीक्षा परिणाम भी मई के अंतिम सप्ताह तक घोषित होने की संभावना है। इन 970 स्कूलों से 10वीं कक्षा की परीक्षा में इस साल शामिल हुए अनेक अभ्यर्थी संकाय स्वीकृति होने के बाद इन्हीं स्कूलों आगे का अध्ययन जारी रख सकेंगे।

गंगनहर में पानी की मात्रा बढ़ाई, किसानों को राहत मिलने की उम्मीद

नहर में चल रहा 1750 क्यूसेक पानी, किसानों ने चक्काजाम स्थगित किया

श्रीगंगनगर, (निसं)। जिले में गंगनहर में घटती पानी की आपूर्ति से नाराज किसानों के लिए राहत की खबर है। पिछले दिनों से नहर में हो रही कम पानी की आपूर्ति को लेकर जिलेभर के किसानों में गुस्सा था, जिसके बाद गंगनहर में अब पानी की मात्रा बढ़ाई गई है। इससे किसानों को कुछ राहत मिलने की उम्मीद है।

कल दिनभर पानी की आवक में

- **पिछले दिनों से नहर में हो रही कम पानी की आपूर्ति को लेकर जिलेभर के किसानों में गुस्सा था, जिसके बाद गंगनहर में अब पानी की मात्रा बढ़ाई गई है**

उतार-चढ़ाव रहा। दोपहर तक खखां हैड पर पानी घटकर 1400 क्यूसेक रह गया था। इससे किसानों की चिंता बढ़ गई थी। शाम तक जल संसाधन विभाग के अधिकारियों ने पंजाब के अधिकारियों से बात की। इसके बाद पानी की आवक बढ़कर 1718 क्यूसेक हो गई। इसी बीच संयुक्त किसान मोर्चा के शिष्टमंडल ने जिला कलेक्टर, जल संसाधन विभाग और पुलिस अधिकारियों से मुलाकात की। बैठक में तय हुआ कि गंगनहर में तय हिस्से के अनुसार पानी की आपूर्ति की जाएगी। पंजाब और राजस्थान में नहरों से पानी चोरी रोकी जाएगी। सिंचाई से जुड़ी समस्याओं पर विशेष बैठक होगी। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत किसानों को मुआवजा दिलाया जाएगा। इन सहमतियों के बाद संयुक्त किसान मोर्चा ने आज होने वाला चक्का जाम स्थगित कर दिया। यह कार्यक्रम सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक नेशनल हाईवे पर प्रस्तावित था। किसानों ने प्रशासन को एक सप्ताह का समय दिया है। चेतावनी दी कि तय समय में समाधान नहीं हुआ, तो आंदोलन किया जाएगा। किसानों ने कहा कि खेतों के लिए पूरी मात्रा में पानी और बीमा योजना का लाभ नहीं मिला, तो वे मजबूती से संघर्ष करेंगे।

प्रोजेक्ट दिव्यांग सारथी : 151 मोटराइज्ड ट्राईसाइकिल वितरित की

राजसमंद, (निसं)। जिला कलेक्टर बालमुकुंद असावा के निर्देशन में जिला प्रशासन की पहल प्रोजेक्ट दिव्यांग सारथी शनिवार को साकार हुई। सरकार एवं भामाशाहों के सहयोग से मिले लाभ को पाकर हर एक के चेहरे पर मुस्कान थी और हर कोई जिला प्रशासन की पहल का आभार प्रकट कर रहा था। शहर के सौ फीट रोड स्थित भिक्षु निलयम परिसर में आयोजित जिला स्तरीय समारोह में सांसद महिमा कुमारी मेवाड़, संभागीय आयुक्त उदयपुर प्रज्ञा केवलरमानी, एनके प्रोटीन्स प्राइवेट लिमिटेड से प्रियांशी पटेल, शुभकाम वेंचर्स की प्रतिनिधि डॉ. विमल कावडिया, भाजपा जिलाध्यक्ष जगदीश पालीवाल, जिला कलेक्टर बालमुकुंद असावा, एसपी मनीष त्रिपाठी, एडीएम नरेश बुनकर, जिला परिषद सीईओ बृज मोहन बैरवा, एसडीएम बृजेश गुप्ता आदि मौजूद रहे। इस अवसर पर सांसद महिमा कुमारी मेवाड़ ने जिला प्रशासन के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि केंद्र तथा राज्य सरकार की योजनाओं सहित शिक्षा, स्वच्छता एवं हर क्षेत्र में आज राजसमंद अग्रणी हैं। सम्भागीय आयुक्त केवलरमानी ने प्रशासन के अभियानों और नवाचारों को लेकर प्रशंसा की। भामाशाह प्रियांशी पटेल ने कहा कि उनकी संस्था जनहित के कार्यों में आगे भी प्रतिबद्धता से भागीदारी सुनिश्चित करेंगी।

प्रोजेक्ट के तहत तीन प्रमुख संस्थाओं एमपी तापड़िया फाउंडेशन जसवंतगढ़ एवं मुंबई, एनके प्रोटीन्स प्राइवेट लिमिटेड अहमदाबाद तथा शुभकाम वेंचर्स (इंडिया) प्राइवेट

राजसमंद में आयोजित प्रोजेक्ट दिव्यांग सारथी के जिला स्तरीय कार्यक्रम में दिव्यांगजनों को मोटराइज्ड ट्राईसाइकिल वितरित की।

लिमिटेड लाडनूं एवं मुंबई द्वारा चलन असमर्थता वाले दिव्यांगजन के लिए 151 मोटराइज्ड ट्राईसाइकिल भेंट की गई, जिनमें से अधिकांश का समारोह में वितरण किया गया। मोटराइज्ड ट्राईसाइकिल वितरण से पहले सांसद, सम्भागीय आयुक्त, भामाशाहों, जनप्रतिनिधियों ने प्रत्येक दिव्यांग का उपरना ओढाकर सम्मान किया। साथ ही सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की ओर से 22 मस्कुलर डिस्ट्रोफी पीड़ितों को इलेक्ट्रिक व्हीलचेयर वितरित की गई। 52 दिव्यांगजन को मुख्यमंत्री स्वरोजगार ऋण योजना के तहत 44 लाख रुपये के स्वरोजगार ऋण वितरित किया गया, जबकि गत वर्षों में 7 या 8 आवेदन ही प्रतिवर्ष स्वीकृत हुए। इसी तरह 1 जनवरी से अब तक स्वावलंबन योजना के तहत 1474 यूडीआईडी (दिव्यांग कार्ड) जारी किए गए। अभियान अवधि में 142 दिव्यांगजन की पेंशन स्वीकृत हुई तो वहीं एक पात्र जोडे को सुखद दाम्पत्य जीवन योजना का लाभ भी मिल गया।

राशिफल रविवार 25 मई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2082, अश्विनी नक्षत्र दिन 11:12 तक, सौभाग्य योग दिन 11:06 तक, वणिज करण दिन 11:12 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-मेष, मंगल-कर्क, बुध-वृष, गुरू-मिथुन, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 11:12 तक है। भद्रा दिन 3:52 से रात्रि 2:02 तक है। आज से नौ तपा आरम्भ होगा। आज मास शिवरात्रि, सावित्री चतुरदशी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:20 से 9:01 तक, लाभ अमृत 9:01 से 12:23 तक, शुभ 2:05 से 3:46 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:39, सूर्यास्त 7:08

मेष
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज कार्य योजनानुसार सम्पन्न हो सकते हैं। घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृष
आज मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

कर्क
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें।

कन्या
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। संभावित धन प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

तुला
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

कुंभ
परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज नये-पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।